आखर हिंदी पत्रिका ; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 5/दिसंबर 2023
Received: 19/12/2023; Accepted: 21/12/2023; Published: 26/12/2023

नरेंद्र कोहली के रामचरित्र आधारित उपन्यासों में जीवन मूल्य

- **डॉ. मल्लिकार्जुन एन**
सहायक प्राध्यापक एवं हिंदी विभागाध्यक्ष
श्री धर्मस्थल मंजुनाथेश्वर स्वायत्त महाविद्यालय.
उजिरे .दक्षिण कन्नड जिला. कर्नाटक-.574240
Mob-9380121487
gmail-mallikarjunna051@gmail.com

डॉ. मल्लिकार्जुन एन, **नरेंद्र कोहली के रामचरित्र आधारित उपन्यासों में जीवन मूल्य**, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 3/अंक 5/दिसंबर 2023,(528-534)

आधुनिक युग गद्य का युग है । सही मायने में उपन्यास को आधुनिक युग का महाकाव्य कहा जाता है । उपन्यासों में मानव-जीवन और मानव-मूल्य प्रस्तुत किया जाता हैं।वर्तमान युगचेतना इतनी संघर्षमय और असाधारण हो गई है, जिसके परिणामस्वरूप उसकी अभिव्यक्ति के लिए उपन्यास ही उचित माध्यम है। उपन्यास में जीवन की व्यापक झाँकी देखने को मिलती है, साथ ही साथ हमें शिक्षा भी मिलती है । उपन्यास सम्पूर्ण जीवन का यथार्थ चित्रण करता है।

नरेंद्र कोहली का कृतित्व इतना समृध्द है कि नि:संदेह समकालीन उपन्यासकारों में उनका स्थान एक श्रेष्ठ रचनाकार के रूप में लिया जा सकता हैं । नरेंद्र कोहली आज हिंदी साहित्य जगत में – उपन्यासकार , कहानीकार, व्यंग्यकार, आलोचक, समीक्षक, नाटककार एवं विचारक के रूप में पहचाने जाते है । नरेंद्र कोहली को बचपन से ही लेखन में रूचि थी । वे छठी कक्षा से लेखन कार्य आरम्भ किया है और आज भी लिख रहे । नरेंद्र कोहली जी 1972 से उपन्यास लिखते आ रहे हैं । अब तक पच्चीस उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं । इनके रामचरित्र आधारित उपन्यास- ' दीक्षा ' सन 1975, ' अवसर ' सन 1976, ' संघर्ष की ओर ' सन 1978 और 'युध्द'(दो भाग)सन 1979 में प्रकाशित हुए।

"अभ्युदय" हिंदी साहित्याकाश में अविर्भाव हुआ और नरेंद्र कोहली के रामचरित्र आधारित उपन्यासों का एकत्रित रूप प्रस्तुत हुए । ' अभ्युदय ' को चार भागों में विभाजित किया गया हैं, वे हैं – दीक्षा, अवसर, सघर्ष

की ओर एवं युध्द । 'अभ्युदय ' पर जैनेंद्र कुमार, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, अमृतलाल नागर, गोपाल राय, विजयेंद्र स्नातक आदि हिंदी साहित्य दिग्गजों ने प्रशंसा के फूल बरसा दिए हैं । इन सब की राय है कि प्रस्तुत उपन्यास नरेंद्र कोहली की परिश्रमशीलता, धीरज, गंभीर जीवन दृष्ठि और महत्वाकांक्षा को दर्शाने वाली अद्वितीय रचना है।

'दीक्षा ' में रामायण की रचना का अपनी कल्पना सामर्थ्य से निर्माण किया है । देश-काल-वातावरण से काफी प्रभावित होते हुए रामायण का सृजन किया है । कथा के विभिन्न दृष्टिकोण वैचारिक दृष्टि से अनमोल है । विभिन्न राजनीतिक व्यवस्था, आम जनता के शोषण, बुद्धिजीवियों का नैतिक अध:पतन इत्यादि विषयों पर क्रांतिकारी विश्लेषण करते हुए एक मशहूर कृति को मौलिक और आधुनिक उपन्यास के रूप में गढ़ने में अत्यंत सफल हुए है नरेंद्र कोहली । प्रस्तुत उपन्यास ने कोहली के जीवन जगत ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है । रामायण कथा को नया आयाम देने में अपनी प्रखर प्रतिभा शक्ति का चयन अपनाया है । विश्वामित्र के आश्रम में राक्षसों का उत्पात से लेकर, राम विवाह, परशुराम पराजय तक कथा को वर्णित किया है ।

'अवसर ' अभ्युदय की दूसरी जिल्द है । इसकी पृष्ठभूमी अयोध्याकाण्ड है । मूल कथा चयन पौराणिक है, किंतु अवसर में समकालीन स्थिति में निहित आधुनिक स्थित्यात्मक, गत्यात्मक तथ्यों का मंथन किया गया है , साथ-साथ राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक मूल्यों का विश्लेषण करते हुए जिंदगी के रूबरू से अलग हटते हुए भी जुडे रहते है।

'संघर्ष की ओर ' यह अभ्युदय रामकथा की तीसरी जिल्द है । इसमें रामायण के अरण्यकाण्ड पर प्रकाश डाला है । आदिवासियों के उत्थान, उनके शोषण के विभिन्न आयामों और शोषण के खिलाफ जनानुराग आदि समस्याओं पर कलात्मक एवं दृष्टात्मक विवेचन किया गया है । शोषण के विरूद्ध जनसंघठन, समस्याओं का समाधान सुझाने का प्रयत्न किया गया है । संघर्ष शब्द ही जिंदगी का कलात्मक एवं स्पर्धात्मक बिंब है । राम की कथा आरंभ से परिसमाप्ती तक होड ही होड है । जौहरी सोने को फरखते समय बारबार घिसता है । अगर वह स्वर्ण हो तो मौल देता है, नही तो बेचने वाले के हाथ में दे देता है । राम को मर्यादापुरूषोत्तम, देवमानव, शांति एवं करूणा स्वरूप कहते है । उन्हें समाज, परिवेश, समय, स्थिति,पात्र के चारों तरफ घेर लेते है , तब नायक पात्र अपनी समयप्रग्या , संयम और विनय से हर स्थिति से भिडता है । खुद को साबित करता है कि वह एक महामानव है। यही 'संघर्ष की ओर ' उपन्यास के मूल तत्व है ।

'युद्ध ' अभ्युदय का यह चौथा व अंतिम खण्ड है । किसी भी काम में सफल होने के लिए आरंभ में संघर्ष, अंत में जंग, परिसमाप्ति में सुखांत या दुखांत होना चाहे इतिहास हो या कहानी, हर एक में यह अनिवार्य तथ्य है । युद्ध में रामकथा के किष्किंधा, सुंदर एवं लंकाकाण्ड के आधार पर वर्णन किया गया है । इस अंतिम पडाव से लेखक की मनोकामना है । सकारात्मक शक्ति की रक्षा करने नकारात्मक शक्ति या दृष्टि का सर्वनाश अनिवार्य एवं अपरिहार्य है । अत: साम, दाम , दण्ड,भेद से दुष्टशक्ति मिटाने शिष्ट शक्ति सर्वथा प्रयत्न करती ही रहती है।

तब ही समाज, संस्कृति एवं धर्म का उत्थान होने वाला है । तबी भारतीय सात्विक परंपरा ठीक हो सकती है । इन बातों की चर्चा करते हुए लेखक ने युद्धकाण्ड का निर्माण किया है । इसमें असत्य में सत्य की खोज, धर्म से अधर्म का सर्वनाश, पुण्य से पाप का विनाश, शांति से क्रांति का विनाश की चर्चा है ।

समाज व्यक्ति की इकाई है अत: प्रतिक्षण समाज में भी कुछ न कुछ परिवर्तन घटित होते रहते है और हम देखते है युग की मान्यताएं , भिन्न भिन्न आदर्श स्थापित करती है । तद्युगीन रचनाओं में यह रूप प्रतिबिंबित होता रहता है । 'रामायण' में जहां उच्चकोटि की सामाजिक प्रतिष्ठाओं का प्रतिस्थापन है वही ' रामचरितमानस ' में सामाजिक क्रांति के संघर्षपूर्ण रूप दिखाई देते है । तदनुरूप आधुनिक सामाजिक व्यवस्था और मनोविग्यान का चित्रण नरेंद्र कोहली के रामचरित्र आधारित उपन्यासों में मिलता है ।

' रामायण ' में मानव जति के चार रूप है – देव, आर्य, वानर और राक्षस । जिनके प्रतीकात्मक रूप कालांतर में मानवेत्तर जातियों केअर्थ में प्रचलित और प्रयुक्त होने लगे । नरेंद्र कोहली के उपन्यासों में भी इन वर्गों को मानव जाति के अर्थ में ही लिया गया है । ' रामायण ' अथवा ' मानस ' में वर्णों की कोई विशिष्ठ रचना व्यवस्था नही है तथापि आधुनिक बौद्धिक धारणा एवं वर्ण व्यवस्था के जडीभूत विचार जो आज भी समाज में है अथवा आर्थिक, राजनैतिक स्थितियों से वर्णगत न सही व्यवस्थागत जो वर्ग बन रहे है या बन जाते है रचनाकार ने अवश्य उल्लेखित किया है।

विश्वामित्र की दीक्षा राम को परंपरागत रूढियों के भेंट का उपदेश देती है और राम उसी से प्रेरित होकर अहल्या का उद्धार एवं कुलशील जानकी से विवाह करते है । विश्वामित्र का इस संबंध में निर्देश है कि परंपरा से चली आ रही अनेक मर्यादाओं को सामान्य लोग मन से कहीं असहमत होते हुए भी ढोते चले जाते है । जब कोई क्रांतिकारी मौलिक व्यक्तित्व उन मर्यादाओं पर प्रहार करता है तथा वे मर्यादाएँ टूटती है और जन सामान्य इनका उल्लंघन कर पाता है । यही मौलिक परिवर्तन समाज के प्रत्येक क्षेत्र क्यों न हो चाहे वह समाज वर्ण, जाति या सामाजिक व्यवस्था के विभिन्न पक्षों ,शिक्षा, संस्कृति या राजनीति आदि में क्रांति की बात कहता है जो भारत के समाज का प्रथम अभीष्ट और आवश्यक तत्व है ।

जीवन स्तर की ऊँच नीच अवस्था के कारण समाज में वर्ग वैषम्य हो जाता है और आज भी शिक्षित-अशिक्षित, सभ्य- असभ्य मानव वर्गों में पर्याप्त भेद भाव बना है । ऐसी विचारधारा में रहनेवाले सेनापति बहुलाख एवं उनके पुत्र भी आर्य राज्य में हीआदिवासियों पर आतंक फैलाते है जो आज भारत के अनेक ग्रामों में सवर्ण एवं हरिजन वर्ग के संघर्ष के रूप में कई स्थानों पर दिखाई देता है ।

राम धर्म की व्यवस्था करते हुए कहते- " प्रत्येक व्यक्ति को आत्म रक्षा का अधिकार है और न्याय की रक्षा उसका धर्म है ' । 1 इस प्रकार जाति एवं धर्म का संबंध तथा समाज की व्यवस्था की दृष्टि से जाति का निर्धारण किंतु उसमें स्पृस्यता के अस्तित्व की कोई गूँजाइश नही होती जो मध्यकाल में रही थी ।

'रावण आज भी जीवित है ' नरेंद्र कोहली अपने रामचरित्र आधारित उपन्यासों में समकालीन मानवीय

वृत्तियों की झलक प्रस्तुत करते है । यही कारण है कि रावण जैसे अनैतिक, चरित्रहीन, अमानवीय चरित्रों का पुनरावलोकन करते है और पाते है कि ये अनैतिक वृत्तियाँ आज भी जीवित है । धन , सत्ता, पद और ग्यान की औषधी से चरित्रहीनता का विष कभी नही कटता । किंतु नैतिक मूल्यों का विघटन तब होता है जब ऐसे चरित्रहीनों का समाज में सम्मान होता है । राम की दृष्टि में चरित्रहीन व्यक्ति क्षम्य नही है । राम का बाण बाली के वक्ष को भेद चुका था । उसने अपनी पीडा में हाथ-पैर पटके और धीमे स्वर में बोला " तुमने मुझसे कहा होता राम ! मैं तुम्हारी पत्नी की खोज ही नही करवा देता, रावण से छीनकर उसे तुम्हारे सम्मुख उपस्थित कर देता ।"2 राम के अधरों पर एक कटु मुस्कान उभरी " एक अपहरणकर्ता दूसरे अपहरणकर्ता का क्या विरोध करता ? एक रावण दूसरे रावण से सीता को कैसे मुक्त करता ? "3 राम का स्वर कठोर हो गया, " और तुम कर भी देते तो भी तुम्हारी सहायता मेरे लिए वाँछनीय नही थी । राम अपनी सुविधा तथा लाभ के लिए अत्याचारियों की सम्मती नही चाहता । तुम चाहे कितना सद्भाव और सौहार्ध लेकर मेरे पास आते, तुम्हारा और मेरा संबंध केवल एक ही हो सकता था – विरोध का । " 4

यथा राजा तथा प्रजा की उक्ति के अनुसार सम्पूर्ण लंका की प्रजा इसी अनैतिक मार्ग पर चलने के लिए बाध्य है । लंका में निर्धन स्त्री- पुरूष को प्रेम का अधिकार नही है । उनकी पत्नियाँ सर्वभोग्य होकर जाती है तभी पेट भरता है । यही हाल बडे-बडे सामंतों का भी है । नैतिक मूल्यों के चित्रण, समकालीन परिस्थितियाँ लंका की परुस्थितियों से भिन्न नही है । आज का सारा विश्व कोरोना जैसी भयावाह त्रासदी को झेल रहा है ।

वर्तमान समाज में एक खास वृत्ति पनप रही है जो नाटक, सिनेमा, दूरदर्शन, अखबारों और विभिन्न पत्रिकाओं द्वारा प्रसारित और प्रचारित की जा रही है , वह है समाज के आदर्श चरित्रों को बुरा साबित करना ; जैसे – महात्मा गांधी, अंम्बेडकर, महात्मा ज्योतिबा फुले, शिवाजी, रामकृष्ण आदि की उदात्त नीतियाँ आज उपहास का विषय बनकर कालबाह्य मानी जा रही है । उसके विपरीत हिंसा, आक्रोश, घृणा, चरित्रहीनता, उपद्रव, विप्लव आदि वृत्तियों को सहानुभूतिपूर्वक प्रोत्साहित किया जा रहा है । नैतिकता और आदर्श मूल्यों को मूर्खता के तराजू में तौला जाता है ।

नरेंद्र कोहली की मानसिकता प्रारम्भ से ही समाजधर्मी और यथार्थपरक रही है । वे सामाजिक चेतना से सम्पन्न ध्येयधर्मी रचनाकार है । वे एक कालसाधक की अपेक्षा जीवन के व्याख्याता ही अधिक है । उनके रामचरित्र आधारित उपन्यास जो है वर्तमान समाज के किसी न किसी अंग को स्पर्श करते हुए समकालीन जीवन की स्पष्ट झलक दिखाई देती है । संयुक्त परिवार प्रणाली भारतीय समाज और संस्कृति की रीढ रही है । यहाँ एक साथ चार-चार पीढियाँ रही हैं । सांस्कृतिक उन्नयन के लिए उपेक्षित प्रेम, दया, सहानुभूति, सहयोग आदि उदात्त भावनाओं का विकास संयुक्त परिवार में ही सम्भव है । किंतु पाश्चात्य शिक्षा के बढते प्रभाव , भोगवादी सभ्यता, औद्योगीकरण एवं विदेशी संस्कृति के प्रभाव के कारण संयुक्त परिवार टूटकर परिवर्तित होने लगे है । संयुक्त परिवार का विघटन एक दृष्टि से नैतिक पतन ही है । जब-जब समाज नैतिक पतन के गर्त में

गिरा है, परिस्थितियाँ एक-सी रही है । चाहे वह कोई भी युग रहा हो ।

नरेंद्र कोहली ने अपनी रामचरित्र आधारित उपन्यासों के माध्यम से समाज के पतन का मूल बिंदु पारिवारिक विघटन में है , यह बताना चाहा है । इस प्रयास में वे समकालीन परिस्थितियाँ निर्माण करने में पूर्ण सफल रहे है । जो पीढियाँ संयुक्त परिवार में पाये जाने वाले संस्कारों से वंचित रह जाती है , इसमें विद्रोह और क्षोभ तो होता ही है और यही कारण है कि बडे-छोटों का आदर और प्रेम नही सम्भाल सकते ।

अपेक्षाएँ भंग होते ही युवा पीढी कैसे उग्र रूप धारण कर लेती है, इसका ज्वलंत उदाहरण लक्ष्मण है । माता-पिता के प्रति अपशब्द बेझिजक कर रहे है – " समाचार मिल गया लक्ष्मण ? " राम शांत भाव से बोले । लक्ष्मण कुछ और तप उठे, " समाचार मिल गया और अपनी ओर से भी आपको एक समाचार देने आया हूं । लक्ष्मण के कंधों पर टगे धनुष-बाण और कमर में बंधा खड्ग न तो बच्चों के खिलौने है, न शोभा की वस्तुएँ । भरत के पक्ष में जो भी लडने आएगा, उनका वध कर दूंगा । " 5 हर व्यक्ति को परायों से ज्यादा अपनों से लडना पडता है ,यदि पारिवारिक सद्भावना न हो तो । सोने की लंका में रहनेवाला सर्व समर्थ रावण भी पारिवारिक विद्रोह से घबराया हुआ है, गृह युद्ध से बचने का उपाय सोचता है ।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारतीय परिवारों में तेजी से विघटन होने लगा । स्त्री की स्वतंत्रता की भावना और व्यक्ति प्रमुखता के कारण परिवार का विघटन बहुत तेजी से हो रहा है । वर्तमान युग में प्रेम और यौन वृत्ति के नए नामों से पुकारा जाता है । कॉल गर्ल और अन्य नए नाम । ये मिला करती हैं मंडियों में, बाजारों में , बडे-बडे होटेलों में, क्लबों में , बियर बारों में , सभाओं में , नये-नये संदर्भों में पेश की जाती हैं । उपन्यासकार ने शुद्ध प्रेम क्या होता है ? सच्चे प्रेमी कैसे होनी चाहिए, प्रेम सिर्फ शारीरिक नही होता, विचारों में मेल न हो तो केवल भावना की लहरों पर बह जाना ठीक नही, सोचकर फैसला लेना और प्रीति को ईर्ष्या एवं द्वेष में न परिवर्तित करना आदि अनेक बातों को नवयुवकों के सामने सोदाहरण रखने में लेखक कामयाब हुए है । जैसे – जैसे मनुष्य में स्वार्थपरता बढ्ती जाती है वैसे-वैसे प्रेम का रूप विकृत हो चलता है । वह स्वार्थ, छल-कपट, जातीयता और कामुकता से ग्रस्त हो जाता है । आरम्भ से ही हमारा समाज जातीय वृत्ति को गंदा, अपवित्र और खराब मानता रहा है । शूर्पणखा की जातीय वृत्ति राम से कहती है – " रहने दो विवाह ! एक बार रीति-निमंत्रण तो स्वीकार कर लो । एक बार । " 6

रावण सीता से कहते है – " मैं तुम्हारे सम्मुख असंख्य सुखों का असीम संसार प्रस्तुत कर रहा हूं । एक बार स्वेच्छा से मेरी शैय्या पर आरूढ हो जाओ, राक्षसों का यह सम्पूर्ण साम्राज्य तुम्हारा है । " 7 रावण की जातीय वृत्ति इतनी प्रबल हो उठती है कि वह अपनी पत्नी मंडोदरी के सम्मुख ही सीता पर अपना सब कुछ न्योछावर करने को तैयार हो जाता है । रामयुगीन समय से बाली जैसे शासक शराब के साथ सुंदरियों को भी रखते थे । ऐसे व्यक्तियों के घर में सुंदर पत्नियों के होते हुए भी वे पराई स्त्री से संबंध बाँधते दिखाई देते है ।

प्रत्येक युग और समाज के अपने नियम,मूल्य होते हैं। जब कोई व्यक्ति इन नियमों का स्वार्थवश उल्लंघन करता है, तब वह अपराध कहलाता है। ऐसे व्यक्ति को शासन द्वारा या समाज के मुखिया द्वारा दण्डित किया जाता है। दोषी को दोषी ठहराना और निर्दोष को निर्दोष घोषित करना तथा मनुष्य के बुनियादी और जन्मसिद्ध अधिकारों की रक्षा करना शासक की न्यायप्रियता कहलायेगी। रामायण में राम कहते है कि – " केवल अपराधी को दण्ड देने से न्याय पूर्ण नही हो जाता, अपराधी की रक्षा करने वाले को भी उसके दुष्ट कृत्यों के लिए दण्डित किया जाना पूर्णत: न्याय के अंतर्गत है।"8 राम के युग में प्रजा के हित में न्याय को अधिक महत्व दिया जाता था। अपराधी को अपराध के दण्ड स्वरूप कडी से कडी सजा दी जाती थी। यहां नरेंद्र कोहली ने उस समय के राजाओं की न्यायप्रियता की ओर निर्देश दिया है। किष्किंधा नगरी का वर्णन करते हुए नरेंद्र कोहली ने ' दीक्षा ' उपन्यास में लिखा है कि बाली को अपने भोग विलास से ही अवकाश नही मिलता है। कुछ समय के शासन चलाने का मौका सुग्रीव को प्राप्त होता है। शासन संभालते ही सुग्रीव अपनी प्रजा के हित में शिक्षा के बारे में एक महत्वपूर्ण निर्णय लेता है और कहता है कि – " आज से मंत्रियों ,सामंतों , यूथपतियों तथा धनिकों के पुत्रों के अध्ययन के लिए विदेश जाने की प्रथा बन्द की जाती है। " 9

प्राचीन काल से ही शिक्षा का अभाव पारिवारिक उत्तरदायित्व और समाज के विरोध के कारण स्त्री का व्यक्तित्व एक सीमित दायरे में बंद होकर रह गया है। स्त्री के आगे - पीछे जितने मिथक खडे किए गए है , उनका उद्देश्य स्त्री को एक खास तरह का प्राणी बना देना है। ताकि स्त्री इस घेराबंदी से बाहर निकलना चाहे तो अपनी ही निगाह में अजूबा हो जाये।अफसोस की बात यह है कि कस्बों और देहातों में तो आज भी महिलाएँ बदतर जिंदगी जीने के लिए बाध्य है। उन्हें बेड-बकरियों की तरह शादी के खूटे से बाँध दिया जाता है। कौशल्या, सुमित्रा,कैकेयी, सीता, उर्मिला, मण्डोदरी, शूर्पनखा आदि शोषित नारियाँ जहाँ राजपरिवार के होते हुए भी इतनी पीडित है तो सामान्य जन की बात ही क्या ?

बहुचर्चित वासनाकाण्ड- यहाँ युवतियों और किशोरियों को फुसलाकर फँसा जाता है, उनका बलात्कार किया जाता है। रावण वध के उपरांत उसके सैनिकों के शिविरों से अपहृत बंदिनी युवतियाँ मिली जो बार-बार राक्षसों की वासना का शिकार हुईं। निम्न वर्ग के हो या उच्च वर्ग, सभी के यौन मूल्य एक जैसे ही है ,जो तथाकथित सभ्य समाज के भी हैं। राम – रावण युद्ध सिर्फ सीता अपहरण के कारण नहीं हुआ। सीता अपहरण प्रतीक मात्र है। अपहरण , बलात्कार राक्षसी संस्कृति का भूषण बन चुका था। अपहरण , बलात्कार की परंपरा रावण के साम्राज्य में यथा राजा तथा प्रजा के रूप में बडी लोकप्रिय थी। परंतु प्रश्न शेष रह जाता है कि क्या इन अपहरणकर्ताओं की पत्नियाँ सुखी है ?

समाज में मानवीय मूल्यों का ह्रास चारों ओर दिखाई देता है। यह भी कहना गलत नही होगा कि मदिरा सेवन विद्यालयी छात्र से लेकर विश्वविद्यालय के कुलपति तक , ग्रामीण तबके से लेकर महानगर तक के प्रशासनिक और कठोर परिश्रम करने वाले से लेकर आईटी-बीटी के वाईट कालर्स तक मदिरा लोलुप, लोभी

और कायर हो गए है । उनके जीवन में एक ही तथ्य रह गया है कि उच्च पद पर बैठे अधिकारी की सेवा में चाटुक्तियां प्रस्तुत करना और जनता के धन ऐंठने का प्रयास करना ।

" जीवन मूल्यों का पतन अथवा परिदृश्य समाज के उन छिद्रों को रेखांकित करता है जो आधुनिक समाज के शरीर से उसके रस निरंतर निकाल रहे है । उपन्यासकार ने सामाजिक , आर्थिक , राजनैतिक , शैक्षिक , वाणिज्यिक , सांस्कृतिक आदि क्षेत्र में जीवन मूल्य की जाँच- पडताल कर समाज के सडे-गले रूप को चित्रित किया है । " 10

विश्वामित्र की दीक्षा और राम के क्रांतिकारी प्रयास एवं जनसंगठन दक्षता के माध्यम से एक नई ज्योति के दिग्दर्शन का सफल प्रयत्न किया है । नरेंद्र कोहली ने अपनी रचना में जीवन के पेहलुओं का स्थूल चित्र प्रस्तुत किया । पात्रों का चिंतन एवं संयोजन के पीछे स्थित मनोविग्यान को मानवीय जीवन मूल्यों के धरातल पर बडी कुशलता से प्रस्तुत किया ।

संपूर्ण राम कथा को एक दृढ वैग्यानिक पृष्ठाधार देने का दायित्व नरेंद्र कोहली ने उठाया है। उनकी युगानुरूप जीवन मूल्यों की व्याख्या करके आधुनिक संदर्भों में कथानक की घटनाओं को प्रतिफलित किया है । उनकी राम-कथा सदृढता पर आधृत हो गई है और आधुनिक जीवन मूल्यों को सफलतापूर्वक प्रतिबिम्बित करती है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. महात्मा तुलसीदास रामचरितमानस – अयोध्याकाण्ड , पृष्ट संख्या- 193
2. नरेंद्र कोहली, महासमर ,युद्ध , पृष्ट संख्या 154
3. नरेंद्र कोहली, महासमर , युद्ध , पृष्ट संख्या 281
4. नरेंद्र कोहली , महासमर ,युद्ध , पृष्ट संख्या 283
5 . नरेंद्र कोहली , अवसर , पृष्ट संख्या 77
6 . नरेंद्र कोहली , अभ्युदय भाग -1 पृष्ट संख्या 639
7. नरेंद्र कोहली अभ्युदय भाग – 1 , पृष्ट संख्या – 374
8. नरेंद्र कोहली , आभ्युदय भाग – 2 पृष्ट संक्या 89
9 . नरेंद्र कोहली , अभ्युदय भाग -2 पृष्ट संक्या 123
10. मल्लिकार्जुन एन डां नरेंद्र कोहली के रामचरित्र आधारित उपन्यासों का एक अनुशीलन (एम,फिल,. शोध प्रबंध) 2006 पृष्ट संक्या -104

****